466 (P)
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1250/1981

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 466

1921

॥ ॐ ॥

क़लम का जौहर

यानी

स्वराज्य देवी

आवे जौहर मेरी इस तहरीर का जिसने पिया।
वह मनुष्य की शक्ल में ही देवता सा बनगया।

लेखक व प्रकाशक—
स्वामी हरिशंकर (सोहं)
तिलक पुस्तक भण्डार,
झन्डा बाजार देहरादून।

अभय प्रेस, देहरादून में मुद्रित।

१००० प्रति] सन् १९३० ई० [मूल्य)॥

RECEIVED
23 MAY 1931
RECORD DEPARTMENT

891.431
H225K

जौहर की परख ।

कोई जौहरी जानता है, भला बन्दर अदरक के स्वाद को क्या जाने हाँ बिल्लियों की रोटी बांटने में तो पक्का उस्ताद है । बस यही हाल उन लोगों का है जो किसी बात को बिना विचारे ही मन माने नतीजे पर झट फुदक जाते हैं और दूसरे की आंखों से देखने और कानों से सुनने लगते हैं जो छिद्रान्वेषी और कुतर्की हैं उनको इस पुस्तक के पढ़ने में मज़ा नहीं आयेगा, आप इसके छोटे से अस्तित्व पर न जाइये बल्कि भीतरी गुणों पर ध्यान दीजिए जिसके इक ज़रा से इशारे से बड़े २ बादशाह ख़ाक में मिलगए और जो दर दर भीख मांगते थे वह शहनशाह बन गए यह वही क़लम का जौहर यानी (कर्म की महिमा) है जिसके सामने खुद भगवान भी चूं तक नहीं कर सकते, फिर भला मनुष्य तो किस गिनती में है, इसके भीतर अमूल्य रत्नों का ख़ज़ाना छिपा हुआ है बस यह समझो कि कूज़े में समुन्दर बन्द कर दिया है जो कोई इस में जितना गहरा गोता लगायगा उतने ही बढिया मोती हाथ लगेंगे इस गोरख धंधे को जिसमें अपनी अपनी भावनानुसार कई प्रकार के अर्थों की तालियां लगती हैं, बार बार विचार करने की ज़रूरत है इस में सच्चे स्वराज्य की प्राप्ति का साधन और शांति का उपदेश है । जो बिना भेद भाव सर्वजगत हितकारी है आशा है कि यह लेख आप न्याय की दृष्टि से पढेंगे, फिर तो पुस्तक स्वयं उच्च भाव को आपके सम्मुख रखदेगी ।

आपका अपना

स्वामी हरिशंकर (सोहं)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 466
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

अब तक हमारी भूल थी तुझको पुकारा जो नहीं।
हम धर्म पर मर जायेंगे मुहं को दिखाया जो नहीं।
तू तो हमारे पास थी घर में ही भीतर छुप रही।
हम ढूंढते बाहर फिरे शीवाल्य में तू खुब रही।

तैतीस कोटि देवता घर माल जन से हीन हैं।
सब होरहे ऐसे दुखी जल के विना ज्यों मीन हैं।
कहां तक कहूं उनकी दशा आगे कहा जाता नहीं।
इस कर्म की महिमा का जननी पार कोई पाता नहीं।

मुद्दत हुई सोते तुझे अब भी खुमारी ना गई।
आलस की तेरे घर से हा फूटी बीमारी ना गई।
अरी कितना दिन अब चढ गया पशु पक्षी सब बोलन लगे।
बनये दुकाने खोल कर हर जिन्स को तोलन लगे

जो वेशकीमत लाल थे जिन का तुझे अभिमान था।
खेले जो गोदी में तेरी जौहर सा जिनका मान था।
उनकी चमक को देख कर बंदर बड़े मोहित हुये।
अधिकार में करके उन्हें मन में वड़े पुलकित हुये।

ऐं ! क्या कहा जौहर मेरा क्या अब नहीं घर में रहा।
हा राम ! मैं क्या सुन रही यह झूंट या सत में कहा।
ऐसा कभी होगा नहीं इसका मुझे विश्वास है।
तप करने कहीं होगा गया कुछ दिन का वस बनुवास है।

होंगीं सफल सब कामना कुछ दिन ज़रा धीरज धरो।
दरशन मेरे होंगे तभी अरपन मुझे वीरज करो।

891.431
H225K

जौहर की परख।

कोई जौहरी जानता है, भला बन्दर अदरक के स्वाद को क्या जाने हाँ बिल्लियों की रोटी बांटने में तो पक्का उस्ताद है। बस यही हाल उन लोगों का है जो किसी बात को बिना विचारे ही मन माने नतीजे पर झट फुदक जाते हैं और दूसरे की आंखों से देखने और कानों से सुनने लगते हैं जो छिद्रान्वेषी और कुतर्की हैं उनको इस पुस्तक के पढ़ने में मज़ा नहीं आयेगा, आप इसके छोटे से अस्तित्व पर न जाइये बल्कि भीतरी गुणों पर ध्यान दीजिए जिसके इक ज़रा से इशारे से बड़े २ बादशाह ख़ाक में मिलगए और जो दर दर भीख मांगते थे वह शहनशाह बन गए यह वही क़लम का जौहर यानी (कर्म की महिमा) है जिसके सामने खुद भगवान भी चूं तक नहीं कर सकते, फिर भला मनुष्य तो किस गिनती में है, इसके भीतर अमूल्य रत्नों का ख़ज़ाना छिपा हुआ है बस यह समझो कि कूजे में समुन्दर बन्द कर दिया है जो कोई इस में जितना गहरा गोता लगायगा उतने ही बढ़िया मोती हाथ लगेंगे इस गोरख धंधे को जिसमें अपनी अपनी भावनानुसार कई प्रकार के अर्थों की तालियां लगती हैं, बार बार विचार करने की ज़रूरत है इस में सच्चे स्वराज्य की प्राप्ति का साधन और शांति का उपदेश है। जो बिना भेद भाव सर्वजगत हितकारी है आशा है कि यह लेख आप न्याय की दृष्टि से पढ़ेंगे, फिर तो पुस्तक स्वयं उच्च भाव को आपके सन्मुख रखदेगी।

आपका अपना

स्वामी हरिशंकर (सोहं)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 466
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

अब तक हमारी भूल थी तुझको पुकारा जो नहीं।
हम धर्म पर मर जायेंगे मुहं को दिखाया जो नहीं।
तू तो हमारे पास थी घर में ही भीतर छुप रही।
हम ढूंढते बाहर फिरे शिवालय में तू खुब रही।

तैतीस कोटि देवता घर माल जन से हीन हैं।
सब होरहे ऐसे दुखी जल के विना ज्यों मीन हैं।
कहां तक कहूं उनकी दशा आगे कहा जाता नहीं।
इस कर्म की महिमा का जननी पार कोई पाता नहीं।

मुद्दत हुई सोते तुझे अब भी खुमारी ना गई।
आलस की तेरे घर से हा फूटी बीमारी ना गई।
अरी कितना दिन अब चढ गया पशु पक्षी सब बोलन लगे।
बनये दुकाने खोल कर हर जिन्स को तोलन लगे

जो वेशकीमत लाल थे जिन का तुझे अभिमान था।
खेले जो गोदी में तेरी जौहर सा जिनका मान था।
उनकी चमक को देख कर बंदर बड़े मोहित हुये।
अधिकार में करके उन्हें मन में वड़े पुलकित हुये।

ऐं! क्या कहा जौहर मेरा क्या अब नहीं घर में रहा।
हा राम! मैं क्या सुन रही यह झूंट या सत में कहा।
ऐसा कभी होगा नहीं इसका मुझे विश्वास है।
तप करने कहीं होगा गया कुछ दिन का वस बनुवास है।

होंगी सफल सब कामना कुछ दिन ज़रा धीरज धरो।
दरशन मेरे होंगे तभी अरपन मुझे वीरज करो।

क़ीमत नक़द में राज्य की ले लूंगी पहिले आप से ।
सौदा उधारी नहीं बने शर्त होगी पहिले आप से ।

गो सुर असुर दोनों मेरे बेटे बराबर हैं सदा ।
पर मुझको वह प्यारे हैं जो निज फ़र्ज़ करते हैं अदा ।
अपने ही पैरों हो खड़े तब ही बनेगा काम है ।
अपना ही बस उद्धार कर शिक्षा यह ख़ासो आम है ।

घर का बंदोबस्त बांध लो चोरों को मत गाली बको ।
औरों के ढूंढो दोष मत खुद अपनी अग्यानी तको ।
अपने ही कर्मो से तुम्हें प्यारो गुलामी है मिली ।
अपने ही आत्म बल से सब को बादशाही है मिली ।

क्या बिन मरे तुम स्वप्न में भी राज्य पासकते कभी ।
क्या कामना त्यागे बिना ऐश्वर्य आसकते कभी ।
यह झूठ है पाखंड है बकने से कुछ मिलता नहीं ।
सुनता नहीं ईश्वर कभी जब तक कि दिल हिलता नहीं ।

यह जानती हूं गो कि मैं भारत स्वतंत्र होजायेगा ।
दुनिया में पहिले की तरह सर उच्चतर होजायेगा ।
पर अपने पिछले पाप सब धोना पड़ेंगे आग में ।
खुद आप में ही है खुदा इस तौर जैसे डाग में ।

उपदेश बस इतना ही है तुम खुद को पहिले मार दो ।
बस फिर तो अपने साथ ही सारा जगत यह तार दो ।
बेशक लड़ो बेशक लड़ो सच्ची आज़ादी के लिये ।
अन्दर लड़ो बाहर लड़ो आरामे शाही के लिये ।

क़लम का जौहर

अरी लेखनी अब जाग जा बिलकुल सबेरा होगया।
पर हाय तेरे घर में तो उल्टा अंधेरा होगया।
आज़ादी तेरी छिन गई तेरा दिवाला होगया।
किस नींद में तू सो रही मुंह तेरा काला होगया।

उठ कर ज़रा तो देख तू जौहर तेरे अब हैं कहां।
जो थे पुजारी नून के वह भी नहीं दीखें यहाँ।
कैसे भला सत् रह सकेगा हाय रावण राज्य में।
आना पड़ेगा अंत में फिर राम पावन राज्य में।

इक बार आंखें खोल तो कैसा मचा अंधेर है।
पल भर की जो देरी करी बचता नहीं कोई फेर है।
चारों तरफ से घेर कर असुरों ने धावा कर दिया।
हाय न्याय धर्म और नीति का बिलकुल सफ़ाया कर दिया।

प्रिय लाज तेरी चल बसी माथे की बिंदी ना रही।
जितेन्द्र सुत तेरे की तो अब भावना भी ना रही।

अम्मा तेरी अन्न की जगह आंतों को अपनी खा रही।
दुख और विपत्ति की बड़ी पुर ज़ोर आंधी आ रही।

तू तो खर्राटे ले रही किस मद को पीकर है पड़ी।
सब रो रहे बच्चे तेरे मृत्यू सरहाने है खड़ी।
कुछ को तो वह चट कर गई पंजों में कुछ पकड़े खड़ी।
लेकर के सब को जाऊंगी इस एक ज़िद पर है अड़ी।

संसार की तुझ पर नज़र अब लग रही है रात दिन।
तक़दीर में है क्या लिखा इस की फिकर है रात दिन।
जब जब विपत हम पर पड़ी तूने सदा रक्षा करी।
अब तक हमारी क्या भनक कानों में तेरे ना पड़ी।

तू बेख़बर सोई पड़ी धन माल सारा लुट गया।
एक बारगी असुरों का दल घर भर में आके जुट गया।
हरचन्द हम कहते रहे हम से ख़ता क्या होगई।
पर हाय आज़ादी हमारी उनको दुखिया होगई।

खाकर कसम तुझ से कहैं उनको न हमने कुछ कहा।
स्वाधीनता ही के लिये बस तेरी हमने दुख सहा।
अब क्या करें क्यों कर जिएं सब ओर से हैं कैद में।
दिल और ज़ुबां मां बंद हैं और दस्तोपा हैं कैद में।

मैय्या हमारा शीश यह चरणों में तेरे है पड़ा।
लेले ज़रा सी भेंट यह अब और क्या हम पै धरा।
लोहू से अपने जिस्म के खप्पर यह तेरा है भरा।
अब देख ले परताल ले खोटा है या यह है खरा।

स्वराज्य केवल जन्म सिद्ध अधिकार है हर जाति का।
राजा हो चाहे रंक हो अमनो अमां पर शांति का।
दुनिया के तख़्ते से गुलामी का निशां मिट जायगा।
'सोहं' के दिल से यार अब झूठा गुमां मिट जायगा।

जलवा तेरा खोया हुवा दूनी चमक में आयगा।
'शंकर' जो तू बन जायगा बस इक पलक में पायगा।
जब तक तु हरि बन्दर रहे कांटा हलक में खायगा।
जिस दम बना भगवान तू माखन स्वर्ग में खायगा।

ॐ शं॰ ब्रह्म अर्पणम् अस्तु।

मिलने का पता:—

स्वा॰ हरिशंकर सोहं तिलक पुस्तकालय
झंडा बाजार देहरादून।

रसिया

पंचो कान लगा कर सुन्ना घर में राज लुटेरों का। टेक
दिन धोली डाका डलवाते,
घर बर की जफ्ती कर वाते
चकमा दे स्वामी फंसवाते,
गुल छर्रे फिर आप उड़ाते
घर के भांडे सब दिए फोड़ बज रहा साज्ञ सपेरों का
भर भर बेले दूध पिलावें
बढिया वढिया माल खिलावें,
मस्ती पाकर वह गरमाते
ज़हर उगलते और फुंकाते,
ओहो मच रही सब में हा हा कार अब है राज्ञ झुटेरों का
झूट ही लेना झूट ही देना
झूट ही में सब रहना सहना,
ढोंग और पौलिसी मक्कारी
फंस रही दुनिया इसमें सारी,
सच्ची आज़ादी पाओगे जब हो ताज अंग्रेजों का